

नमोः नमोः कवताय ॥ इति नमः नमोः यमनना
नमोः ॥ इति नमः नमोः यमनना
नमोः नमोः कवताय ॥ इति नमः नमोः यमनना
नमोः नमोः कवताय ॥ इति नमः नमोः यमनना
नमोः नमोः कवताय ॥ इति नमः नमोः यमनना
नमोः नमोः कवताय ॥ इति नमः नमोः यमनना
नमोः नमोः कवताय ॥ इति नमः नमोः यमनना
नमोः नमोः कवताय ॥ इति नमः नमोः यमनना

चक्राभाः संघवदः विनययमनः स निष्काममहता
ग्याधि **र** स्यवसादा । नृवि सति निरुद्धः स्यामिना
मिदयवः तद्वयत्ता मवयि सुप्रदयनि सुखः कव
नामनत्रा लभतः कयादमायुहयम ॥ गुनसविन
चः सतमूत्र सव कोतः अयि साद्रया **र** रूद्रक
निः वित्तवम वृत्ता पूर्ववमन मधूनतवत्

ठया सानि लिदि टियः स्यामि ग्यति न वायु
वृद्धता **र** नः सवि सातवाः यरुतमनिरु
हुवा त्रुगवतः ग्ययन नयि ग्यताय । **र** न
भाः ग्ययनित्य ग्यताय ॥ **र** नभाः ग्यचद
सवतायः ॥ **र** नभाः ग्यचद सवताय । **र** न
धम **र** न नृदया नदकातिका । **र** न

जमदाग्निकताचन॥ कमतासनसुः शाशिर्ह
 धमः कतकमत्र॥ क्षता॥ सहज्ञानदकात्र
 का॥ **आ**॥ निरिष्वतत्रिनहदयाः क्लादसुत
वाक जाव॥ **रा** **ग** **ज** **क्ष** **त** **र्ज** **त** **वि**॥ विष्यस
 गानरुः विभुवयाः प्राकानविद्यतगुशंरुवाः
 ॥१॥ नमानिरवागिष्यतः सयलनृनिहदयः

राविष्यसत्रा॥

विताशयाः कतागमत्रमनाहतः सयात्रिनह
 तया॥१॥ यितनितालुहाणितयनः यंचजिनम
 कतामनितयन॥३॥ यमचकृमदाः कतिशय
 धमतासः धर्माचायं यहादवस्मस॥५॥ सताम
 तानमितठचतनरुनयायतमादिः वडात्रिग
 गूनतयन॥७॥ **रा** **ग** **र्ज** **त** **वि**॥ सखप्रतुः मला

सखप्रतुः मला

कृष्णमः उदयतिः श्रवातः ॥ १ ॥ यनवयात
 लोवः ॥ यः सुकवातः रश्मिः रुवत्रत्रिभिः सत
 तनः सुतुलः ॥ १ ॥ **नागः रश्मिः** ॥ निम्ना
 भादि **रश्मिः** ॥ यः श्रवातः ॥ यः श्रवातः ॥
 दावतनादः श्रवातः सुश्रवातः तलतः ॥
 श्रमिनीनतनिः ॥ यः श्रवातः ॥

रश्मिनाद

नृपः ॥ यः श्रवातः ॥ यः श्रवातः ॥
 यः श्रवातः ॥ यः श्रवातः ॥
 यः श्रवातः ॥ यः श्रवातः ॥
 यः श्रवातः ॥ यः श्रवातः ॥
 यः श्रवातः ॥ यः श्रवातः ॥
 यः श्रवातः ॥ यः श्रवातः ॥

विद्यायाति दिक्कतया र्हादिनिः शब्दमृतकृत
 यनादत्रायिरवाथजादिदसुत्रमिगतसूत्रन
 जिनस्तानेदायनीः विलम्ब्यती ॥ १ ॥ दिव्यव
 तिविरः जगज्जसदीयमः जहानि सीसुमनी
 जः वज्रदेवि ॥ जम्भजम्भुज्यां सततः
 इमतिना सनमो ज्युदाता ॥ ॐ ॥

१ गगकमुदि ॥ यतथागानिदवातिरुवनवा
 यिता रावद्युमात्रदकदत्यनधिनानी ॥ १ ॥
 उंनमासिदवि जम्भजवाताहि ॥ सद्धि सिद्धि
 युदायानिजगतजनानि ॥ २ ॥ यवदत्रगत
 नकतवर्धुजि र्हा नयासिदवानिलवदन
 ॥ वाग्वाभाहानिदवाहितवर्धुलारव

श्वातथागानि

॥ २५ ॥

[illegible]

॥ ॥ इः ज्ञः हं ह्रीं ह्रः विष्णुं श्यायां न
 सन्त्ययमीः सहजं जानन् ॥ ॥
 रागयन्मन्त्रा ॥ ज्ञानं नृत्तं नृत्तः ज्ञानं
 वभाणः प्रन्मन्त्रं लचक्रं तायां र वज्रं ज्ञानं
 सः यत्तिष्ठतिः प्रन्मन्त्रं लचक्रं तायां ॥ १ ॥
 ७ प्रन्मन्त्रं लचक्रं तायां र सन्त्ययमीः ज्ञानं नृत्तः

हन्मन्त्रं लचक्रं तायां र वज्रं वा ताहिः ज्ञानं नृत्तः
 स वलं लचक्रं तायां ॥ २ ॥ पुनः सावर्ता विष्णुं
 श्यां नृत्तः ज्ञानं नृत्तं ताहिः ज्ञानं सन्त्ययमीं नृत्तं
 नृत्तः स वदन्तः वज्रं व्यदसदतिः प्रान्ति
 वयनं सन्त्ययमीं ॥ ३ ॥ तिलं वग्नं नृत्तं नृत्तं
 : सन्त्ययमीं तिलं वग्नं नृत्तं नृत्तं विष्णुं वा ताहिः

ज्ञानं नृत्तः

卷之四

॥ १ ॥ नृक्ष दत्त वा नृनिमलः मा मद्रि दत्त
नृक्ष गत वृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः ॥ २ ॥
जा गम वदः यत्रान वर्या नृक्ष गत वृक्ष दत्त
जा गत वृक्ष दत्त ॥ ३ ॥ वृक्ष दत्त नृनिमलः
नृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः ॥ ४ ॥
नृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः नृनिमलः ॥ ५ ॥
नृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः नृनिमलः ॥ ६ ॥
नृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः नृनिमलः ॥ ७ ॥
नृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः नृनिमलः ॥ ८ ॥
नृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः नृनिमलः ॥ ९ ॥
नृक्ष दत्त नृनिमलः नृनिमलः नृनिमलः ॥ १० ॥

वड सुता ग्यत्र पि ॥ ॐ ॥ १ ॥ **गगन** **अत्र** **न** **वा**
 नमः हं जा का न न ल य व नः स च न व स व उ
 नो ध न ॥ १ ॥ न नो हं हं र न नो न नो जा हं हं
 ॥ २ ॥ द्वं दा जा न ग नः आ ग व नः व ड घ थ म
 दा ध न ॥ ३ ॥ ध व न स सं व नुः द ह ड नः
 स न द स ग्य हियः च द म न ॥ ॥ मा या

२०५५

द ह तिन ज गू र ग्य हिय क न ता स व म हं
 ॥ ॐ ॥ **गगन** **सं** **ग** **त्र** **मा** **ता** **ह** ॥ ति च क त वि स गि
 म द न मा ष्ठाः थ नो जा न द म न ति ध न न व ड
 वा ता हिः जा ती न न स व नः न नो त ग मी म हं
 जाला ॥ १ ॥ न नो हं हंः न नो हं हंः न नो हं हं र
 नि न व नु च न व क य नो म र्थः ति न नः य ल

२०५६

मा जानद मृत्ति धरा ॥ विष्णु वज्रजृद्ध च ३
नामकूट आनः लाउ आरु लक्ष सुगुण लि ता २
वज्रद्युता च अउ मत्र वत्तागः वित्तमा जान
द मृत्ति धरा ॥ ३ ॥ कनकि कयातः यल सुवा
गाकि सुतः व द्वाग्गल धराः वाद्य च अ कती
वसिष्ठता ॥ ४ ॥ दिगविदिगः काकाग्ग दिजम

दाकि मिद विः सह जा जानद मृत्ति धरा ॥ ५ ॥
नमा मिदग्गलि च दृ श धराः सत मृत्त च नन
जाता द्विता ॥ ६ ॥ मागजृद्ध दि ॥ लाङ्ग आरुत
गः कि या यित स वतः यलयि क वालि त्र व
रा ॥ ७ ॥ कूट वाउ लः सदि या मृ सानः मकूतः
कूटानिदगं वरा ॥ ८ ॥ ललत म्मा नवः स वत

२६
॥

गयाः सप्तलक्षप्रलः प्रालम्भात्तद्दशप्रवि
त्राः हि तः वज्रवात्राहिः रुद्रमहिमात्तद्दशप्रवि
॥ ॥ गमात्तल्लयनः वत्रसप्तप्रयनः कव
लेरुत्रायितावाः गगनानिवावम्भुः वादिला
त्रादाः प्रलम्भुतः रुद्रवान् ॥ ॥ क्रिय
कउवाटद्वतः सुदितात्तसप्तलः ययिह

यिहसप्तलत्तत्तद्दशप्रवित्राहितः वज्रवा
त्राहिः रुद्रवाक्कुर्वन्वतामिज्जम्भता ॥ ॥
गमात्तिलीवम्भुवज्रजादायात्तलः सत्तत्त
वृत्तनत्तम्भुताः सप्तप्रजाजानदः रुद्रिल
प्रभुतः सप्तलवज्रवात्राहि ॥ ॥
॥ गगनद्वि ॥ तिलदाचाययिजागिनीदेह

गगनद्वि

वाल ॥ कमलकांतस्य यः कृतं ह्यं विद्यात्त
 ॥ ॥ आ गी नी तु क्क वि नः र्व न हं न डि व वि
 ॥ ॥ ता ना मु ह च वि आ तः क मु ह स वि व वि ॥
 ॥ ॥ जे व ह आ गि नि ल व आ यिः म डि क त
 वा ह य आ लः आ द य आ न स मा न ॥ ॥ सा ग
 ह त य त य त क चि ता तः च न स य इ यिः व
 अ

ऊ रु ज ॥ ॥ रु ग यी ता त ज ह मः क द त्र वि त
 र न त य ना ती मा ष्ठाः उ रु य से व वी ता ॥ ॥ ॥
 ॥ ता ग का म द ॥ ह वि ज स र व र य स म द हाः न
 व ल सं द्रा णि स त त ऊ न ध ता ॥ द्वा द श स्र ज व
 द व द र्मुः द्वा द श व र्मु ल त क न र्मा ॥ १ ॥ न मा
 मि श्री ति च क्क ह त मा त रु यं रु व रु य ह त न

१५
 २५
 २५

॥ २ ॥ चतुर्गवि सति यथेष्टत्वं: पूति सं
विल विल सत ॥ चतुर्चक्र यदज्ञान वलि वीता
द्वी सवतः युक्त तित स्थिता ॥ ३ ॥ यथा स
तः आल कालि यदा कानाः जति सुद ता २
द्वद सव वी ७ क ला वाः न मा मि श्री च क स
म्वत ता या ॥ ४ ॥ सत गत च ल न सित श्रुति

याः रुत यि स ता न श्री कलि सा ॥ दान यति
प्रम मा रुत सः स द प्र गत आ ता श्रि ता ॥
॥ ॐ ॥ नाग श्री त र वि ॥ वि वि ह वि न ल
ः मा ता वि ग शि व द न २ द व ज स न ग गः स व न
ह रु क न ना ॥ १ ॥ ना व ल न मा मि श्रीः स व न
वि ता २ व रु ज्ञा गि नी त ति लः स रु स ग द्वा ता

वि वि ह वि

॥ १ ॥ वज्रवाताहाजाः त्रिगणक (२) रं भुक्ति
 शिवि त्रिवि लं ग्य त स मल स गम वि ॥ ३ ॥
 लो क द ह नः वि वृ मा रं धु रं रं रं रं रं रं
 ना तृ न त्रा य न त्रा य न वि वृ ॥ ४ ॥ द्वाद
 स रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं
 रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं

ता ग रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं
 म द ह न रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं
 ॥ १ ॥ तं नो रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं
 को ध त्रा या ॥ २ ॥ नि वि दि त द्य इ ति ल कः
 त द ह न रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं
 ॥ ३ ॥ हा त ह ल वृ द्धाः रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं रं

अव नि कि त ग न

२

आः प्रकृतं तित्तं तवः जद्वरवरुलनयसाद
 ॥ ४ ॥ सद्वरसं विनित्तं तायया गवनि कल
 वातः गीदं तव सत्रं यसादं तव ह्याजालि
 गन कोटि तित्तं तवः तित्तं तायि गवनि कनना
 रताग लवि ॥ त्रय र वा प्रल सय तगुश
 लाकलितं जश्वयदश्वयः य सं हा त्रं गीः

१३५३३५

२ ॥ तनं ननं ननं लाः रुं रुं का तना रायः
 मालानः मालानित्तं वा तनं र नित्तं दहायुत
 : त्रिभजननि वजल जागिनी र जय र हाद
 जारु तगुशः क तित्तं कया लकलक्ष्मी गी ॥ २ ॥
 त्रय र ता श्वरुं : जगत सं हा त्रः य ग मालिज
 यो य त्रय वा प्रल ॥ २०३ ॥ रताग कनवि

विष्णुस आ त्रं

॥ विष्णुसप्तशती नमस्तुते ॥ १ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ २ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ ३ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ ४ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ ५ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ ६ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ ७ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ ८ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ ९ ॥
 ॥ नमस्तुते ॥ १० ॥

गोचरस्तलिय ॥ ॥ गोलुथरुजः उम
दृश्यत्वा गोवसुता दृश्यते मृजाम् मुमात्रा
विह्वलिता ॥ ॥ आलिकाल इयिजा
लधचा यथा न वदन्नामा चलनः ईकाल
वदन्त्या ॥ ॥ ५०३ ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

2862

को ॥ ॥ सवत ऊ व स व मः सवत ऊ
न वादि तः स म त रु द को या इ रा ख म न
ल म त म ॥ ॥ न च उ डा गी नाः न प्र म
न व र वी ता हिः जा ति ग न का तः न ड
का ॥ ॥ हा त ध म ग त रु तः हा न च य्या व

॥ रागा मङ्गली ॥ ३ ॥ न ग म र त न ग्रा त तः त न स
लो र ॐ ध नी ल द तिः वि ङ्ग त क म ॥ १ ॥
रु ग ते नु क थ कि याः गू ग दा व ॥ द ङ्ग मा त व
ध्र ग नि दा व ॥ २ ॥ त क न य न ति निः त क
मा त र २ १ १ क त ठि क या ल नि त्राल ल ॥ ३ ॥
वा द्य च म म पु' य त्या लि री र व व ल द त ग

॥ रागा मङ्गली ॥

वा द्य म ॥ ४ ॥ च ल न स त ग म र ग ता त नि
त्रा ता ॥ रु न यि ज म धः व ड च लि त ॥ ५ ॥
॥ रागा धना ग्री ॥ स वा का ना म हा म र य ड लि च
वृ जा न न्द द हा र ति स व न रु ला य म हा स व
त्र याः च द स्र य दायि म ति ॥ ॥ न या या त
ना न व त्र लि ताः ति स व न क र स्र दा य नी र

॥ रागा धना ग्री ॥

क कया लवता ॥ ॥ श्री स व त राय वापु
लि कृष्ण जगत्तिना १ मालाय त चाययया
तमायाः सा स रु न म द्राला द्विना ॥ ॥
या म व क्क म द वा म हा थ वालया उ न त मि
त मा ता र नील हा त त ता ह त क न का रु त
मः च व म्भू य ज ता व क ता ल व ता ॥ ॥

आ न द व ज्ञा र्हा य त द चा वाययया तः कालि
ता त दि न म द र वि ष्ण कालि स ज द्वा च द्वा ज न
कृतः आ द्य च म म य उ म द ॥ ॥ च ति स
वि त वि ल श्व त ना य कः ता नि च क म हा वि त
वि ता र क त न गी ग म त वि त ल श्व लः स र्वा य
स या त स सा ल व ता ॥ ॥ ॐ ॥ त ग ग म त

२ निशचन डी।

वमामिदं श्रीलिमस्तनयतमसा तं रवामन्तु यत्तु यध
नयुत्ता। त॥ २ ॥ जगत्तमसा तनाहृतनयुसादसिधि
त्वं रजगत्तमसा वीष्णुः सिद्धिरुलदहिम॥ ३ ॥ वं वं
यादवसहिर्तः दूर्यतिस्तदतिद विरज्युथनाहृतपूर्वनाह
स्तमंगल॥ ४ ॥ सतगुलुचननयुसादसिद्धिमदलेवा
नवचलललिमनाजनमा मि॥ ५ ॥ युक्तामागिति सिद्धि

नः श्रीवडाचार्यरज्जुमित्रयुक्तनचित्रः श्रीलिप्रणिता ॥
 उन्नमीवृद्धाय ॥ पादस्नानविधिमाह ॥ पानासनयश्मजायाडीजु
 नपाचावजथापनयः जूनपानयष्टः शिवायाः वालसयाः नानाजंति
 रयाः चमदूगुनिकानयकूर्नदूगुः वकदूः काफः किर्ननक्रयाडिवात्र
 रयकाः दूपनिहाफः थनियवगु जूनयामजिअ ॥ ॥ आडकनडाचु
 नवकगुः पगु लिफूर्नयडागु थथिगु जूनयाकायाडाथापनयः जून

याजजगतः सावदाद डाननया ॥ थन कसः सग्ननः दंशवलिः यरु
 याधनमिनायूरुफयाथयाय ॥ जूदीगु तूर्मदलः यंचगु वासाधनः नीस
 मोधिफु क्षाधिवासन ॥ ॥ सधधिका नरुमकूरुयात् ॥ जूगु कृतिधून
 काडा ॥ ॥ न ॥ थन जूनयाः सासिजतघलः वेत्यहतादयाः वेत्यहयदय
 यकथार्ससास्नानचूरुतनया ॥ तावता ॥ ॥ नूजयतमानुतजसंजयनू
 पानूक्षता ॥ जूधिरुतयाय ॥ उंवजकर्मक ॥ उंवजतं ॥ उंवजयऊदू ॥

उं वज्रसंधिवं। फलं रयनसाय॥ यं वा मृतं आदिं स्नानयायायं वायदा
नयूजाः सिद्धतायि च तात्राह न कुरु मस्तानयीर्यं गुः होयस्तानत्र आदिन
चायः जायः यधमा॥ ॥ यनयवदयकं थासु मिसयूजाया चकः सा
नक्रुदात्रनयहावना॥ ॥ ननु ससमयदवान् दिग्गजनागवसूधावूध
वाधिसत्त्वान् संपूज्य गगल्लह्यय॥ यवनाहूति याय॥ ॥ ननु उं हूरयमि
ति मकुनं श्रुत्या फलं हूरय हूरलं हूरं निर्मग्नना वज्रपतमान् मयि विहा

या॥ उं मयनीवजी हव वज्रवं धरुं॥ यनञ्च विह्वलनयाया॥ हूमिसस्तान् चक्रुः
ननया॥ हावना॥ ननसचकलं हूरं यनं गुरुचार्यमिननः हूरं कानलेनं गु
यग्रहन् धतिहि हूरयुधि वां संचादितन निहर्ता हूरु हूरु हूरु कनककनं सा
धानि नमः सधर्नकान् हूरिनीयुनीयुथिविदवनीविहावा॥ धूप॥ ॥ त्वं दवि
साङ्गि हूरानि सध्वं वृद्धा नूतयिनी॥ चर्या नयवी णाधन हूमियानमितासच
यथाभावर्तं हूरं साकसि हूरतयिनीः तथा भाववर्तं जित्वाः विहाव स्याय

आज्यादिवाक्यज्यादिहिः संयुक्तः। जवासाकाफः कलिकाष्टमितिः पून
सर्तश्चयात्। लोकाग्रयसाता। ॥ तिनादिहिश्चयात्। आश्रितक्षमस्यपदिन
कृतयत्नवित्रचिनायीपिजिकायीरुच्यकतनी। ॥ सम्यक्पतिसाधितव
शाहनमृत्तिकायत्रियूत्रितेषुः सम्यक्कुमाकाठितेषुः गतापूत्रकवः कनक
व्याप्त्यातिशयवत्तूयादिद्यतिनक्रमेणयत्न। नद्वयनियदिना वत्तेन
कोलसू। नित्रः रुत्रकः मलेः यमतागः व्यताः यच्छमृतः

गिरात्राक्षरः पतिपूत्रितायत्रानिः विहावानूत्रयत्नः सूवत्तूयाः नामे
* द्योतधववकानिः चत्वात्राघनि। उवजयकद्रुं। सर्वकर्मिकमन्त्र
मक्षरुत्तसत्तवात्रयत्रिजफानिः चत्वात्रात्रधूर्तानिचत्तुकोलसूक्ष्माया
तद्वयनिसम्यक्पुणः सूक्ष्मात्रनकुर्यात्। ॥ नतः सुस्मिन्सूक्ष्मायैतैर्वैलैस्तैका
त्रजवायुगिजलावनिसूक्ष्मत्रयत्रिद्वैकात्रजतद्विस्मिसमूहैः वज्रमतिज
हूमीः वज्रप्राकानः वज्रयजत्रः वज्रवीनानचविहाव्या। विष्टुचक्रवादिका

[illegible]

कृत्वाः यवतामर्च्यते शतवानपत्रिजयादि कृत्वा स्वस्त्यदिकाश्च भक्तमन्त्र
 नतिदिशुधात्रयातचक्रमृयानीः मन्त्रेनाश्रुतवातानियत्रिजया॥ न
 वक्रकृद्गानि स्वस्त्यकोट्यैः सस्त्रयाः वानकाहिः प्रयूनयन् ॥ ॥ मन्त्र
 लथिलकैः स्नानननकिम्यनैकैः यन्त्रैः कृतिः पाथसमाय ॥ यदुक्तं प
 जाः ज्ञातिवायः सैवाकृतिः विसर्जने ॥ ॥ ॐ नित्यादस्त्यपनविधिस

नकाययः पूजायायः मनुजाय ॥ नृवं ॥ ३ ॥ पथिमसः कानिः कगु
 नः काडहनिवः कपूतः लुयाद्रसमाः यमित्राः लपलः अरुपलः कायय
 पूजायाय मनुजाय ॥ श्रीमंजी ॥ ४ ॥ उल्लनसः मासः वीलाथुतिः अचूयं
 हननिः सलः लुयागुतः मलः लपलः अरुपलनकाययः पूजायाय
 मनुजाय ॥ अरुं ॥ ५ ॥ थयिः पूयकाथासः शयूरामाः नसाजनः
 जनीरुतिः जगुतः सवः लपलः अरुपलनकाययः पूजायायः जायम

॥ ६ ॥ वज्रवजिनी ॥ ७ ॥ यजिनसः मूतः निजिः फूर्गः लः वालः लाउन
 लपलः अरुपलनकाययः पूजायायः जायमनु ॥ उं नलवजीनी ॥ ८ ॥
 पथिमसः सानः सनः माजिः विमिनामूलः नकाचन्युनः यलः
 लपलः अरुपलनकाययः पूजायायः जायमनु ॥ उं धमवजीनी ॥
 ॥ ९ ॥ उल्लनसः काः कसमाहिः जानामासिः वरुलिः लः लपलः अ
 रुपलनकाययः पूजायायः जायमनु ॥ उं कर्मवजीनी ॥ १० ॥ जगु

नमः कालानः अचरुपतिः जिरालः गलु अतः मृतिः नयलः शुक्ल
पलनकापूरः पूजायायः जायमनु॥ ॐ वज्रमस्य ॥ १० ॥ नमः
वसुधैव कुटुम्बकम्ः सुनकिलः तुम्भकः लयलः अरुपलनकायपू
जायायः जायमनु॥ ॐ वज्रमस्य ॥ ११ ॥ वायुवसुः दामालः सि
धुः शुक्लमालः सत्रपिः वेदुयः लयलः अरुपलनकायपूयः पूजायाय
जायमनु॥ ॐ वज्रगीतः ॥ १२ ॥ ॐ गानसः कयगुः कस्तनदल
जनः थकाथयलः रुनगीः लयलः अरुपलनकायपूयः पूजायायः जाय

मनु॥ ॐ वज्रनृत्त ॥ १३ ॥ धने नृयादसकाथसः थतिविदिः ध
नुः जमधित्तः पंचतलः लयलः अरुपलः लयासिंघाः आदिनंतयः ध
नकाः अथाय अत्रतनः थउ २ मनुन जाययाय धाल १०५ पंचायरा
नयजाः थतिधूनकाः सिर्जयति सः जनु वाया अथजनुनकायूया
अः नृत्तसिचु जिकाथनः शलः मालतानलसिचुदिकाया हावी ना
याय ॥ ॐ तित्तन्या सविधानस माफ ॥ मल्ललथिलः कि

विष्णुसहस्रनाम

१७ नमो ब्रह्माय भूतमात्राय विधिमाह्वय ॥ कार्यार्थकनय
क्रीडासर्वभूतः दधुनलिनश्च वलिथुनिरुता ॥ न कर्मति वाय
७७ ममलुतपंचगर्हसधनः सिधनयः त्रिसमाधिः कृत्स्नमासथ
तिः धूनकाजजुगिह्वापनाजुगुह्वातिः दवयुजाः दवतादूतिः
धूनकाजः मनुवा ~~स~~ नयागुलिथसमादिकवाकलयाधातः ज
ननयगुः लपतः अरुपतयादअन रुजयतु सल्लतचदनया

जत ॥ ॥ ॐ कुरु लक्ष्मीं कुरु कुरु स्वाहा ॥ धर्मकुरु नारायण कुरु कुरु
स्वतियाजजुगिह्वापनाजुगुह्वातिः दवयुजाः दवतादूतिः ॥
धर्मकुरु पायें वायाजक्रीडायादूतनश्च कनयते ॥ रयुजायाः ॐ
कृत्स्नानि च युजः लपतजरुपतयादअनः मनु ॥ उजुगिजि
कुरु नजि कुरु वजकायगुसरजलरमलकालमहायागुह्वनी
कुरु कुरु स्वाहा ॥ धर्मन वायाजः नारायण कुरु कुरु स्वतियाज

७ नया दाजो ते ॥ रय अया थस मास दिक ता फ नया सा क न र्शत
च ॥ था कालिर्न शूल ॥ सा स्वस्ति वाक्क यद पर्यं थस मास तय के ॥ थ
स मास खान च्छुन त सी ॥ ताव ना ॥ रय का त र्ज वि ह्व व ज नू यं गि ना दा नू
यं विशा वः धूयः निना ऊनः वलियात १ था पल पंतयः वा स्या ज ला
यूजा याय ॥ यं र द द्वा ॥ या ल उ लाय कः ते रू उ ल क थ कालिर्न ठा स
रूय कः व लि स च्छाय कः वौ धै ली वि स र्जनः व लि थ न न मू स उ अ क ल

यय सि च्छा क न त र्श शूल ॥ ॥ ति वि चा स उ अ कू ल १ त या ज का उ कि ० वि
की जू ड उ अ न त या उः ता व कः स्व च्छाय मा स क ल क ॥ ॥ व जः ता वाः त म
रं ता यः कू स ल र व न लाय क सि ध्र न न वि ह्व व ज चा यः दि कि न यः ज
ज म काः स्या नः जू ड उ अ सि स कू रा या य क ॥ क याः आ ज लः ज उ र य उ स थ स
मा स दिक त यः म क ॥ ॥ उ न म स म क वू धा नीः उ म ला पु ति गि ना ॥ ॥
उ म्मी ष च क व लि स ध्र य १ म क व न्ध रू ड रू व न व न्ध वृ ड य वीः व न्ध धा

五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय